Ministry of Culture
Government of India

आज़ादी का अमृत महोत्सव

साहित्य अकादेमी
(राष्ट्रीय साहित्य संस्थान)
संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार की स्वायत्तशासी संस्था
Sahitya Akademi
(National Academy of Letters)
An Autonomous Organisation of Government of India, Ministry of Culture

डॉ. के. श्रीनिवासराव
सचिव
Dr. K. Sreenivasarao
Secretary

प्रेस विज्ञप्ति

छह दिवसीय साहित्य उत्सव का शुभारंभ
संस्कृति राज्य मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने किया उद्घाटन
24 भारतीय भाषाओं के लेखक हुए पुरस्कृत
अनुवाद से साहित्य की महत्ता कम नहीं होती – उपमन्यु चटर्जी

नई दिल्ली। 11 मार्च 2023; साहित्य अकादमी के सबसे बड़े साहित्योत्सव का आज विधिवत उद्घाटन संस्कृति राज्य मंत्री, भारत सरकार माननीय श्री अर्जुन राम मेघवाल ने किया। अकादेमी की प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए उन्होंने कहा कि हमें समाज में एक ऐसी सकारात्मकता पैदा करनी है जिससे हमारा देश विकासशील की जगह विकसित राष्ट्र की पदवी पा सके। उन्होंने प्राचीन संत कवियों कबीर, गुरु नानक तिरुवल्लुवर का उदाहरण देते हुए कहा कि यह संत केवल कवि नहीं बल्कि बड़ी सोच और व्यापक दृष्टि के साहित्यकार थे जिन्होंने हमें प्रकृति से प्यार करना सिखाया। उन्होंने अकादेमी द्वारा किए जा रहे कार्यों की प्रशंसा करते हुए कहा कि सभी कला और साहित्यिक संस्थानों को समाज में रचनात्मक और सकारात्मक परिवेश बनाएँ रखने में सहयोग करना चाहिए। श्री मेघवाल ने जी 20 का उल्लेख करते हुए कहा कि इसकी थीम भारतीय संस्कृति और परंपरा अर्थात तीन सिद्धांतों 'एक पृथ्वी एक परिवार और एक भविष्य' पर आधारित है। ऐसे बड़े आयोजनों से ही हम अपने निर्धारित लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं। इस वार्षिक प्रदर्शिनी में चित्रों तथा लेखों के विवरण से विगत वर्ष की उपलब्धियों को प्रदर्शित किया गया था।

कमानी सभागार में सायं 5.30 बजे आयोजित हुए साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2022 अर्पण समारोह से पहले रवींद्र भवन परिसर में पुरस्कृत रचनाकारों के साथ मीडिया से बातचीत, युवा साहिती, बहुभाषी कवि सम्मिलन, अस्मिता, बहुभाषी कहानी–पाठ एवं पूर्वोत्तरी कार्यक्रम आयोजित किए गए जिनमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के प्रख्यात लेखक भुचुंग डी. सोनम, मृत्युंजय सिंह, के. श्रीलता, वाई.डी. थोंगछी, के. जयकुमार, रामकुमार मुखोपाध्याय की अध्यक्षता में अनेक रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ प्रस्तुत कीं।

पुरस्कार अर्पण समारोह की अध्यक्षता आज चुने गए नए अध्यक्ष माधव कौशिक ने की और समापन वक्तव्य नवनिर्वाचित उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा द्वारा प्रस्तुत किया गया। इस अर्पण समारोह के मुख्य अतिथि लब्धप्रतिष्ठि अंग्रेजी लेखक एवं विद्वान उपमन्यु चटर्जी थे। पुरस्कार अर्पण समारोह की अध्यक्षता करते हुए साहित्य अकादेमी के नवनिर्वाचित अध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि साहित्य अकादेमी का यह मंच विविधता में एकता देखने का सबसे बड़ा उदाहरण है। क्योंकि यहाँ हम उन्हें एकसाथ भारतीय साहित्य की एकात्मकता के रूप में देख सकते हैं। यह सभी लेखक आम आदमी के संघर्षों को हमारे सामने रखते हुए हिंदुस्तान की नब्ज हमारे सामने रखते हैं। आगे उन्होंने कहा कि लेखक चाहे किसी भी भाषा के हो उनके साहित्यिक सरोकार एक से ही है। इस देश का साहित्य हमेशा जीवंत रहा है और रहेगा। अपने समापन वक्तव्य में साहित्य अकादेमी की नई उपाध्यक्ष कुमुद शर्मा ने कहा कि भारत की विभिन्नताओं के बावजूद इसकी जीवंत परंपराओं, इतिहास और स्मृतियों से एक जैसा नाता है। समरसता के सूत्र सारे भारतीय साहित्य को एक बनाते हैं। साहित्य अकादेमी के पुरस्कार सृजन की उत्सुकता जगाते हैं और यह परंपरा आगे भी बनी रहनी चाहिए। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए प्रख्यात अंग्रेजी लेखक उपमन्यु चटर्जी ने कहा कि हर लेखक अलग–अलग तरीके से अपने अनुभव व्यक्त करता है। लेकिन अनुवाद के माध्यम से जब वह दूसरी भाषाओं में पहुँचता है तब भी उसकी महत्ता कम नहीं होती है। उन्होंने साहित्य अकादेमी की अनुवाद योजना का विशेष उल्लेख करते हुए कहा कि यह एक बड़ा काम है और निरंतर जारी रहना चाहिए।

आज के पुरस्कृत रचनाकार थें – मनोज कुमार गोस्वामी (असमिया), तपन बंद्योपाध्याय (बाङ्ला), रश्मि चौधुरी (बोडो), वीणा गुप्ता (डोगरी), अनुराधा रॉय (अंग्रेज़ी), गुलाममोहम्मद शेख (गुजराती), बद्री नारायण (हिंदी), मुडनाकुडु चिन्नास्वामी (कन्नड), फ़ारूक़ फ़याज़ (कश्मीरी), माया अनिल खंरगटे (कोंकणी), अजित आजाद (मैथिली), एम. थॉमस मैथ्यू (मलयाळम्), कोइजम शांतिबाला (मणिपुरी), प्रवीण दशरथ बांदेकर (मराठी), के.बी. नेपाली (नेपाली), गायत्रीबाला पंडा (सुखजीत (पंजाबी), जर्नादन प्रसाद पाण्डेय 'मणि' (संस्कृत), काजली सोरेन 'जगन्नाथ सोरेन' (संताली), कन्हैयालाल लेखवाणी (सिंधी), एम. राजेंद्रन (तमिळ), मधुरांतकम नरेंद्र (तेलुगु), अनीस अशफ़ाक़ (उर्दू)। कमल रंगा (राजस्थानी) पुरस्कार ग्रहण करने नहीं आ सके।

(के. श्रीनिवासराव)